<u>प्रेस विज्ञप्ति</u>

गोरखपुर, 12 सितम्बर। युगपुरुष ब्रह्मलीन महन्त दिग्विजयनाथ जी महाराज की 50वीं तथा राष्ट्रसंत महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज की पाचवीं पुण्यतिथि के अवसर पर गोरक्षनाथ मन्दिर में आयोजित साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह के दूसरे दिन 'श्रीमद्भागवत महापुराण कथा ज्ञानयज्ञ' के प्रारम्भ में व्यासपीठ का विधि-विधान से पूजन-अर्चन हुआ। व्यासपीठ से अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरू रामानुजाचार्य स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने कल की कथा को आगे बढ़ाते हुए कहा कि शुकदेव जी महाराज से परीक्षित जी को शान्ति प्राप्त हुई। शुकदेव जी ने कहा व्यावहारिक जीवन आध्यात्मिक जीवन की आधारशिला है। मानव जीवन सीमित समय के लिए मिला है। 'जातस्य हि ध्रुवोमृत्युंम्' जन्म लेने वाले की मृत्यु निश्चित है। अतः मानव जीवन की महत्ता को समझना चाहिए। शुकदेव जी ने कहा कि जीवन का उत्तम लाभ है- आत्मदर्शन। मानव जीवन का सबसे बड़ा लक्ष्य प्रभुदर्शन है। आत्मदर्शन से ही सम्पूर्ण जगत में प्रकाश होता है। परीक्षित जी स्वयं को और प्रभु को जानना चाहते थे, अतः उन्होंने शुकदेव जी से कहा कि महाराज! मुझे प्रभु का दर्शन करा दीजिए जिससे मैं मृत्यु से निर्भय हो जाऊँ। शुकदेव जी ने कहा कि भगवान का दर्शन भक्त दो प्रकार से प्राप्त करते हैं- स्थूल दर्शन और सूक्ष्म दर्शन। स्थूल दर्शन के लिए साधक को आसन, प्राणायाम, सत्संगति और इन्द्रियों पर विजय प्राप्त करना होता है, तब विराट् पुरुष का दर्शन होता है। सूक्ष्म दर्शन के सम्बन्ध में कहा कि 'ईशावास्यम् इदं सर्वम् यत्कि´्च जगत्याम् जगत्।' सारा ब्रहमाण्ड भगवान का स्वरूप है। जो संसार में रमता है वह संसारी होता है और जो संसार को बनाने वाले को स्मरण करता है वह योगी होता है। 'भजो रे मन प्रेम से राम रघुरइया' भजन से सम्पूर्ण वातावरण भक्तिमय हो गया।

कथावाचक ने आगे कहा कि इस स्थूल जगत में भगवान को देखना ही परम भक्ति है। भगवान तो कण-कण में व्याप्त हैं। जो व्यक्ति इन सभी वस्तुओं में भगवान का दर्शन कर लेता है। वही वास्तविक भक्त है। संसार के कार्यों के कारण अलग-अलग होते है परन्तु संसार के कार्यों के निमित्त और उपादान प्रभु परमात्मा स्वयं हैं। धर्म ही परमात्मा है, परमात्मा जगत के रूप में परिणत है। **'शुनि चैव श्वपाके च पण्डिताः समदर्शनः।'** साधक सम्पूर्ण जगत में ईश्वर को देखता है। अतः अपने हृदय में ईश्वर का दर्शन होता है। वैराग्य से ईश्वर की प्राप्ति होती है, जो परमहंस होते हैं, जो शरीर और चेतना को अलग-अलग अनुभव करते हैं, जो शरीर को आत्मा का घर समझते हैं, वे अभ्यन्तर में ही प्रभु को प्राप्त करते हैं।

परीक्षित जी ने सुकदेव जी से पुछा की मरने वाले व्यक्ति को मरने से पहले क्या करना चाहिए तो सुकदेव जी ने उत्तर दिया कि व्यक्ति को मरने से पहले भगवान का इतना भजन इतना किर्तन कर लेना चाहिए तथा इतना कथा श्रवण कर लेना चाहिए कि मृत्यु के समय उसे

ईश्वर के अवाला कोई और स्मरण ना रहे। उन्होंने कहा कि हर क्षण व्यक्ति को अपने मृत्यु का यदि दर्शन हो तो जीवन में विकार नहीं आयेंगे। परन्तु मनुष्य जानता है कि उसका मरना निश्चित है फिर भी वह अपने मृत्यु को याद नहीं रखता।

परीक्षित जी ने पूछा कि तैंतीस करोड़ देवताओं में किसकी पूजा की जाय तो शुकदेव महाराज ने कहा कि परमात्मा की पूजा से चराचर जगत की पूजा हो जाती है।

सनातन धर्म की महत्ता को बताते हुए कथावाचक ने कहा कि सभी धर्मों का मूल सनातन धर्म है। कोई भी प्राणी इस धर्म में आकर कल्याण प्राप्त कर सकता है। सनातन धर्म श्रीकृष्ण है, श्रीराम है। वाल्मीकि रामायण में मारीच ने कहा है कि धर्म के साक्षात् विग्रह राम हैं। विराटता ही सनातन धर्म है।

भारत देश की महत्ता बताते हुए कथा व्यास ने कहा कि धन्य है भारत देश की माटी जिसमें भगवान भी अवतार लेने के लिए लालाइत रहतें हैं। उन्होंने कहा कि मुक्ति हमारे धर्म में बहुत आसान हैं। मुक्ति के अनेक साधन बतायें गयें हैं। जिस घर में भगवान सालिकग्राम की पूजा होती है वहां के कीट पतिंगो को भी मुक्ति मिल जाती है। गंगा के दर्शन से मुक्ति प्राप्त होती है। मरे हुए व्यक्ति की अस्तियां गंगा में प्रवाहित कर देने मात्र से मुक्ति मिल जाती है। मरते हुए व्यक्ति के मुह में तुलसीदल पड़ जाये तो भी उसकी मुक्ति हो जाती है। मुक्त प्राणी जिसका स्मरण करता है, उस प्राणी की भी मुक्ति हो जाती है। उन्होंने कहा कि मुक्ति कठिन नहीं है कठिन तो भक्ति है। चैतन्य महाप्रभु ने भोग एवं मोक्ष दोनो को पिशाचीनी कहा है क्योंकि दोनो ही भक्ति के मार्ग में बाधक है।

कुन्ती प्रसंग सुनाते हुए कथाव्यास ने कहा कि जब श्रीकृष्ण महाभारत युद्ध के बाद द्वारिका जा रहे थे तो उन्होंने अपनी बुआ परमभक्त कुन्ती से वर मांगने को कहा तो कुन्ती ने कहा हे केशव यदि तुम मुझे कुछ देना चाहते हो तो मुझे दुःख दे दो क्योंकि तुम सदैव दुखियों के साथ रहते हो मुझे तथा मेरे परिवार को सानिध्य चाहिए।

मंच पर भक्तमाल अयोध्या के महन्त कौशल किशोर दास, गोरखनाथ मन्दिर के मुख्य पुजारी, योगी कमलनाथ जी, देवीपाटन के महन्त योगी मिथिलेशनाथ, कालीबाड़ी के महन्त रविन्द्रनाथ जी महाराज, चचाईराम मठ के महन्त पंचानन पुरी जी, एवं यजमान के रूप में श्री चन्द बंसल, श्री अवधेश सिंह, श्री जवाहर कसौधन, श्री सीताराम जायसवाल, श्री अजय सिंह, श्री ओम प्रकाश जालान, श्री महेश पोद्दार आदि उपस्थित रहे।

कथा के अमृत मंत्र

1. महापुरूषो के क्रोध में भी कृपा का अनुभव करना भी भक्ति का एक रूप है।
2. यज्ञ, गौ, सात्विक-सज्जनों की रक्षा के लिए भगवान अवतार लेते हैं।
3. धर्म और ईश्वर वहीं हैं जहाँ भगवान की आराधना होती है, गो सेवा, अतिथि सेवा, बड़े-बुजुर्गो का सम्मान होता है।
4. भागवत का आश्रय लेने वाला कभी अध्यात्म मार्ग से नहीं भटकता।
5. भगवान के चरणामृत के पान से अकाल मृत्यु को दोष समाप्त हो जाता है।
6. कभी-कभी प्रारभ्य इतना प्रबल हो जाता है कि राजा परीक्षित जैसा धर्मात्मा भी अनुचित कार्य कर बैठता है।
7. जब प्रारभ्य विपरीत हो जाता है। बड़े-बड़े महात्मा भी कठोर से कठोर नियम तोड़कर वासना के वसी भूत हो जाते है।
8. जो शास्त्रोचित आचरण करे तथा दूसरों को भी प्रेरणा दे वही आचार्य है। जो आचरण से शिक्षा दे वही आचार्य है।
9. भगवान से कभी भी माँगना तो सद्बुद्धि माँगना ।
10. इन्द्रियों को विषयों से रोकना कठिन है, किन्तु भगवान की ओर मोड़ना आसान है।

<u>दिनांक 13.09.2019 साप्ताहिक श्रद्धांजलि समारोह में संगोष्ठी</u>

साप्ताहिक श्रद्धाजलि समारोह के अन्तर्गत पूर्वाह्न 10.30 बजे से 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद एवं संस्कृत' विषय पर संगोष्ठी दिग्विजयनाथ स्मृति सभागार में सम्पन्न होगी। संगोष्ठी की अध्यक्षता पूर्व कुलपति एवं महाराणा प्रताप शिक्षा परिषद के अध्यक्ष प्रो0 यू0पी0सिंह जी करेंगे, मुख्य अतिथि दिगम्बर अखाड़ा अयोध्या से पधारे महन्त सुरेशदास जी तथा मुख्य वक्ता श्री हृदय नारायण दीक्षित, माननीय विधानसभा अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश होंगे। संगोष्ठी में प्रो0 मुरली मनोहर पाठक, आचार्य, संस्कृत विभाग, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर का भी व्याख्यान होगा।